

पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2023 का आपराधिक आवेदन अपील (डी. बी.) संख्या 494

वर्ष 2020 के थाना कांड संख्या 117 से उत्पन्न थाना-कोपा जिला-सारण

- =====
1. रवि कुमार महतो उर्फ रवि कांत महतो राम नरेश महतो उर्फ नरेश मौर्य के पुत्र निवासी ग्राम-बसदिला, थाना-कोपा, जिला-सारण
 2. मणि कुमार उर्फ काकू, रमेश महतो के पुत्र निवासी-ग्राम-बसदिला, थाना-कोपा, जिला-सारण

.....अपीलकर्ता/अपीलकर्तागण

बनाम

बिहार राज्य

.....उत्तरदाता/प्रतिवादीगण

=====

भारतीय दंड संहिता की धारा 376/109 और 341 पोक्सो अधिनियम धारा 4/16, 6-सूचना प्रौद्योगिकी (आई टी) अधिनियम धारा 67 और 67 ए - आरोप है कि जब पीडिता खेत/मैदान जा रही थी तो अपीलकर्ताओं ने उसे पकड़ लिया और उसे एक गढ़े में ले गए गया-अपीलकर्ता संख्या-1 में उसके कपड़े फाड़ दिए, जबकि अपीलकर्ता संख्या-2 उसके शरीर का बीडियोग्राफ बना रहा था- अभियोजन पक्ष के गवाहों द्वारा दिए गए बयान में प्रमुख विरोधाभास चिकित्सा साक्ष्य से पता चलता है कि पीडिता के पूरे शरीर पर कोई चोट नहीं है अभियोजन पक्ष पीडिता की उम्र साबित करने के लिए कोई दस्तावेजी साक्ष्य पेश करने में विफल रहा, चिकित्सा समय में पता चलता है कि पीडिता की उम्र 16 से 17 वर्ष के बीच है क्योंकि निर्धारित उम्र में दोनों पक्षों के बीच दो वर्ष का अन्तर है, आरोपी और पीडिता को नाबालिग न मानते हुए उसका लाभ दिया गया पीडिता को नाबालिग न मानते हुए इसका लाभ दिया गया। पीडिता द्वारा लिखित शिकायत में किसी भी अपीलकर्ता के खिलाफ बलात्कार का कोई आरोप नहीं लगाया गया जिस मोबाइल फोन से घटना की विडियो क्लिप रिकॉर्ड की गई है, उसे पुलिस ने जब्त नहीं किया पीडिता के खून से सने कपड़े जॉच एजेंसी द्वारा जब्त नहीं किए गए और घटना स्थल पर कोई खून नहीं मिला निर्णय की तिथि से दो दिन पहले ही अपीलकर्ता संख्या-2 के खिलाफ अतिरिक्त आरोप तय किए गए जिससे अपीलकर्ता संख्या-2 को बचाव का पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाया आक्षेपित निर्णय और आदेश को खारिज कर दिया गया और उसे दरकिनार/रद्द कर दिया गया।

पटना उच्च न्यायालय के क्षेत्राधिकार में

2023 का आपराधिक आवेदन अपील (डी. बी.) संख्या 494

वर्ष 2020 के थाना कांड संख्या 117 से उत्पन्न थाना-कोपा जिला-सारण

- =====
1. रवि कुमार महतो उर्फ रवि कांत महतो राम नरेश महतो उर्फ नरेश मौर्य के पुत्र निवासी ग्राम-बसदिला, थाना-कोपा, जिला-सारण
 2. मणि कुमार उर्फ काकू, रमेश महतो के पुत्र निवासी-ग्राम-बसदिला, थाना-कोपा, जिला-सारण

.....अपीलकर्ता/अपीलकर्तागण

बनाम

बिहार राज्य

.....उत्तरदाता/प्रतिवादीगण

उपस्थिति:

अपीलार्थी के लिए: श्री हर्षवर्धन शिवसुंदरम, अधिवक्ता,

प्रत्यर्थी/ओं के अधिवक्ता: श्री सुजीत कुमार सिंह, सहायक लोक अभियोजक

कोरम: माननीय श्री न्यायमूर्ति श्री विपुल एम. पंचोली

और

माननीय न्यायमूर्ति श्री सुनील दत्ता मिश्रा

मौखिक निर्णय

(द्वारा माननीय न्यायमूर्ति श्री विपुल एम. पंचोली)

तिथी: 27.02.2024

वर्तमान अपील दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (इसके बाद सी.पी.सी/आ.द.सं. के रूप में

संदर्भित) की धारा-374 (2) के तहत दायर की गई है, जिसमें 3 अप्रैल 2023 की सजा के समान्य फैसले और 10.04.2023 की सजा के फैसले को चुनौती दी गई है। 2020 की एस.टी. पोक्सों संख्या 40 2020 के कोपा-थाना कांड संख्या-117 से उत्पन्न के संबंध में विशेष न्यायाधीश पौसो अधिनियम सारण ने अपलीलकर्ता संख्या-1 को दंडनीय अपराध के लिए दोषी ठहराया है। पोक्सों अधिनियम की धारा 4/6 और भारतीय दंड संहिता की धारा 376 और 341 के तहत दोषी ठहराया और 10 साल की कठोर कारावास की सजा सुनाई गई और 25000/- रुपये का जुर्माना पोक्सों अधिनियम की धारा 14 के अंतर्गत 20 वर्ष का सश्रम कारावास एवं 25000/- रुपये का जुर्माना। पौसों अधिनियम की धारा 6 के तहत 25000/- रुपये जुर्माना और भारतीय दंड संहिता की धारा 341 के तहत एक महीने का साधारण कारावास की सजा सुनाई गई। अपीलकर्ता संख्या-2 दो पोक्सों अधिनियम की धारा 4/16,6 और भारतीय दंड संहिता की धारा 376/109 और 341 और आई.टी. अधिनियम की धारा 67 और 67 एक तहत दोषी ठहराया गया है और 10 साल के कठोर कारावास और 25000/- रुपये का जुर्माना की सजा सुनाई गई। पौसों अधिनियम की धारा 4/16 के तहत 20 वर्ष का कठोर कारावास और 25000/- रुपये जुर्माना पौसो अधिनियम की धारा 6 के तहत एक का साधारण कारावास, आई.टी. अधिनियम की धारा 67 एक के तहत 50000/- रुपये का जुर्माना 1 सीपी सजा को एक साथ चलाने का निर्देश दिया गया है।

2. अपीलार्थियों की ओर से विद्वान अधिवक्ता श्री हर्षवर्धन शिवसुंदरम और प्रतिवादी-राज्य की ओर से विद्वान ए. पी. पी. श्री सुजीत कुमार सिंह को सुना।

3. अभियोजन की कहानी संक्षेप में इस प्रकार है:

“27.05.2020 को पीड़ित की माँ घास काटने के लिए खेत में गई थी और उसे एक घंटा के बाद आकार और घास इकट्ठा करने के लिए कहा 00 शाम को, वह घास इकट्ठा करने के लिए खेत में जा रही थी, जब आरोपी रविकांत महतो (अपीलकर्ता संख्या 1) और गांव-बसदीला, थाना कोपा के मणि कुमार उर्फ काकू (अपीलकर्ता संख्या 2) ने उसे तिरछे इरादे से घेर लिया और आरोपी रविकांत महतो ने उसे पकड़ लिया, उसे पास के गड्ढे में ले गया, उसका निचला कपड़ा (सलवार) उतार दिया, उसका समीज फाड़ दिया, उसे गड्ढे में धकेल दिया और उसके शरीर के साथ

अश्लील हरकतें करना शुरू कर दिया और मणि कुमार उर्फ काकू पर आरोप लगाया कि उसने अपने मोबाइल फोन में घटना को कैद करना शुरू कर दिया, जिस पर वह शोर मचाने लगी, जिस पर उसकी मां दौड़ती हुई आई और उसे बचा लिया। उसकी मां को घटनास्थल पर देखकर दोनों आरोपी भाग गए। वह अपनी मां के साथ घर लौटी। उस समय तक आरोपी मणि कुमार द्वारा तैयार की गई वीडियो क्लिप इंटरनेट पर वायरल हो गई थी। उसकी माँ वीडियो क्लिप को वायरल करने के कृत्य के बारे में शिकायत करने के लिए आरोपी के घर गई जब आरोपी रविकांत के पिता, नरेश महतो, चंद्रेश्वर महतो, इंद्रजीत महतो, राहुल कुमार, लखन कुमार और विष्णु कुमार, सभी लाठी, डंडा, भाला आदि जैसे हथियारों से लैस थे, ने उसका पीछा किया। वह किसी तरह घर पहुंचने में सफल रही। फिर से, सभी आरोपी दरवाजे पर आए और उसके परिवार के सदस्यों को पीटना शुरू कर दिया, जिसमें पीड़ित के भाई, अर्थात् रुपेश कुमार, पवन कुमार, मुन्ना कुमार और पीड़ित की बड़ी चाची गंभीर रूप से घायल हो गए। हंगामा सुनकर स्थानीय लोग मौके पर जमा हो गए और उन्हें बचा लिया। ”

4. प्रथम सूचना प्रतिवेदन दाखिल करने के बाद, जांच एजेंसी ने जांच की और जांच के दौरान, जांच अधिकारी ने गवाहों के बयान दर्ज किए और संबंधित दस्तावेज एकत्र किए और उसके बाद आरोपी के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया। चूंकि मामला विशेष रूप से सत्र न्यायालय द्वारा विचारणीय था, इसलिए मामला सत्र न्यायालय को सौंपा गया था।

5. निचली अदालत के समक्ष अभियोजन पक्ष ने पी. डब्ल्यू. 1 संतोष महतो, पीड़ित के पिता, पी. डब्ल्यू. 2 दुर्गावती देवी, पीड़ित की मां, पी. डब्ल्यू. 3, डॉ. किरण ओझा, डॉक्टर जिन्होंने पीड़ित की चिकित्सकीय जांच की, पी. डब्ल्यू. 4, पीड़ित, पी. डब्ल्यू. 5 सुनील कुमार ठाकुर, जांच अधिकारी से पूछताछ की।

6. अपीलार्थियों की ओर से उपस्थित विद्वान अधिवक्ता ने मुख्य रूप से समर्पित किया कि वर्तमान एक गलत निहितार्थ का मामला है जिसमें इन दोनों अपीलार्थियों को पीड़ित और उसके परिवार के सदस्यों द्वारा गलत तरीके से फंसाया गया है ताकि अपीलार्थी संख्या 1 की माँ द्वारा दर्ज किए गए मामले से उनको त्वचा को बचाया जा सके, जिसमें 2020 का कोपा थाना मामला

संख्या 145 है और यह सुनिश्चित किया जाए कि वास्तविक घटना प्रकाश में न आए।

6.1. यह आगे समर्पित किया जाता है कि अपीलार्थी संख्या 1 की माँ ने अपीलार्थी संख्या 1 के परिवार के सदस्यों और पीड़ित के परिवार के सदस्यों के बीच हुई लड़ाई की घटना के लिए प्रथम सूचना प्रतिवदेन दर्ज करने का प्रयास किया।

6.2. यह समर्पित किया जाता है कि अपीलार्थी संख्या 1 की माँ द्वारा दिए गए बयान के आधार पर प्रथम सूचना प्रतिवदेन दर्ज नहीं किया गया था, इसलिए संबंधित दंडाधिकारी अदालत के समक्ष एक लिखित शिकायत दर्ज की गई थी, जिसके आधार पर पुलिस को प्रथम सूचना प्रतिवदेन दर्ज करने का निर्देश जारी किया गया था।

6.3. इसके बाद अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने प्रस्तुत किया कि पीड़ित और उसकी माँ द्वारा दिए गए बयान में बड़े विरोधाभास और सुधार हैं। यह समर्पित किया जाता है कि पीड़ित द्वारा पुलिस को दी गई लिखित शिकायत में दिए गए बयान के अनुसार, आरोपी रविकांत महतो (अपीलकर्ता संख्या 1) और गाँव-बसदीला के मणि कुमार उर्फ काकू (अपीलकर्ता संख्या 2), थाना कोपा ने उसे अप्रत्यक्ष उद्देश्य से घेर लिया और आरोपी रविकांत महतो ने उसे पकड़ लिया, उसे पास के गड्ढे में ले गया, उसके निचले कपड़े (सलवार) को खींच लिया, उसके समीज को फाड़ दिया, उसे गड्ढे में धकेल दिया और उसके शरीर के साथ अश्लील कृत्य करना शुरू कर दिया और आरोपी मणि कुमार उर्फ काकू ने अपने मोबाइल जिस फोन पर उसने शोर मचाना शुरू किया, उस पर उसकी माँ दौड़ती हुई आई और उसे बचा लिया। हालांकि, पीडब्लू 2, दुर्गावती देवी, यानी पीड़िता प्रश्नगत मां द्वारा दिए गए बयान के अनुसार, उसने घटना को देखा है और उसने यह भी आरोप लगाया है कि आरोपी रवि कुमार ने उस प्रश्नगत बेटी के साथ बलात्कार किया, जबकि आरोपी मणि कुमार उर्फ काकू उसी का वीडियोग्राफ बना रहा था।

6.4. अपीलार्थियों के विद्वान वकील आगे समर्पित करते हैं कि जिस मोबाइल फोन पर वीडियोग्राफ रिकॉर्ड किया गया था, उसे जांच एजेंसी द्वारा जब्त नहीं किया गया था। इस स्तर पर, यह बताया गया है कि अदालत के समक्ष पीड़िता द्वारा दिए गए बयान के अनुसार, उसके भाई दीपक कुमार ने अपने मोबाइल फोन से पेन ड्राइव में वीडियोग्राफ की नकल की, क्योंकि आरोपी ने

वीडियो क्लिप को वायरल कर दिया था। हालांकि, उक्त पेन ड्राइव को जांच एजेंसी को नहीं सौंपा गया था और पीड़ित ने इसे अदालत के समक्ष पेश किया है। यह भी समर्पित किया जाता है कि दीपक कुमार से भी अभियोजन पक्ष द्वारा गवाह के रूप में पूछताछ नहीं की जाती है। इसके बाद विद्वान वकील ने कहा कि पीडब्लू 2 द्वारा दिए गए बयान के अनुसार, पीड़ित की मां के कपड़े पूरी तरह से खून से सना हुआ था। हालांकि, उक्त कपड़ों को जांच एजेंसी के सामने पेश नहीं किया गया था और इसलिए, उन्हें जब्त नहीं किया गया था। यहां तक कि जांच करने वाले अधिकारी को घटना स्थल पर खून के कोई धब्बे नहीं मिले हैं। इसके बाद विद्वान वकील ने कहा कि अभियोजन पक्ष भी पीड़ित की उम्र साबित करने में विफल रहा है। यह समर्पित किया जाता है कि हालांकि पीड़ित स्कूल में पढ़ रहा था, लेकिन अभियोजन पक्ष न तो स्कूल रजिस्टर या पीड़ित का जन्म प्रमाण पत्र समर्पित करने में विफल रहा है। इस स्तर पर, यह समर्पित किया जाता है कि चिकित्सा साक्ष्य के अनुसार, पीड़ित की आयु 16-17 वर्ष के बीच थी। इस बिंदु पर, विद्वान वकील ने माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय पर भरोसा किया है **जय माला बनाम गृह सचिव, जम्मू और कश्मीर सरकार और अन्य** के मामले में, **ए. आई. आर. 1982 एस. सी. 1297** में रिपोर्ट की गई।

7. इसके बाद अपीलार्थियों के विद्वान वकील ने तर्क दिया कि चिकित्सा साक्ष्य भी पीड़िता द्वारा दिए गए कथन का समर्थन नहीं करते हैं। इसलिए भी, निचली अदालत ने पीड़ित और उसकी मां द्वारा दिए गए कथन पर भरोसा करते हुए एक त्रुटियां की है।

8. विद्वान वकील ने अंत में तर्क दिया कि जहां तक अपीलार्थी संख्या 2 का संबंध है, निचली अदालत ने उसके खिलाफ आई. टी. अधिनियम की धारा-66 और आई. पी. सी. की धारा-341 के तहत अक्टूबर, 2020 में आरोप तय किया। हालांकि, आरोप को बदल दिया गया और मणि कुमार उर्फ काकू अर्थात् अपीलकर्ता संख्या 2 के खिलाफ 22.03.2023 को पोक्सो अधिनियम की धारा 6 की धारा 4/16 के तहत आरोप तय किए गए। पोक्सो अधिनियम की धारा 6, आई. पी. सी. की धारा 67 और आई. टी. अधिनियम की धारा 67ए और उसके बाद, उक्त आरोपों के खिलाफ बचाव करने का उचित अवसर दिए बिना, 24.03.2023 को यानी दो दिनों की अवधि के

भीतर निर्णय सुरक्षित रखा गया था। इस स्तर पर, यह भी बताया गया है कि इससे पहले, धारा-313 सी.आर.पी.सी. के तहत अपीलार्थी संख्या 2 का बयान 19.09.2022 को दर्ज किया गया था। इस प्रकार, अपीलार्थी सं. 2 को आरोप के उक्त जोड़ के कारण गंभीर रूप से पूर्वाग्रहित किया गया था और अंततः, विचारण न्यायालय ने अपीलार्थी सं. 2 को उपरोक्त अपराधों के लिए भी दोषी ठहराया है। इसलिए विद्वान वकील ने आग्रह किया कि आक्षेपित निर्णय और आदेश को रद्द कर दिया जाए और दरकिनार कर दिया जाए।

9. दूसरी ओर, विद्वान सहायक लोक अभियोजक ने वर्तमान अपील का जोरदार विरोध किया है। विद्वान सहायक लोक अभियोजन समर्पित करते हैं कि वास्तव में, विचारण न्यायालय ने आक्षेपित आदेश पारित करते समय कोई त्रुटियां नहीं की हैं। यह प्रस्तुत किया जाता है कि निचली अदालत ने पीड़ित, पीडब्लू 4, पीड़िता की मां, पीडब्लू 2, पीड़िता की जांच करने वाले डॉक्टर द्वारा दिए गए बयान और धारा-164 के तहत पीड़ित द्वारा दिए गए बयान पर सही ढंग से भरोसा किया है। सहायक लोक अभियोजक ने पीडब्लू 5 सुनील कुमार ठाकुर द्वारा दिए गए बयान का भी उल्लेख किया है और इसके बाद समर्पित किया है कि निचली अदालत के समक्ष अभियोजन पक्ष के नेतृत्व में साक्ष्य के आधार पर, अभियोजन पक्ष ने उचित संदेह से परे अपीलकर्ताओं के अपराध को साबित कर दिया है। उचित देह से परे और इसलिए, निचली अदालत ने दोषसिद्धि का आदेश दर्ज करते समय कोई त्रुटियां नहीं की हैं। अतः विद्वान ए. पी. पी. ने आग्रह किया कि वर्तमान अपील को खारिज कर दिया जाए।

10. इस स्तर पर हम अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य पर चर्चा करना चाहेंगे।

11. पीडब्लू. 1 पीड़ित के पिता संतोष महतो ने अपने बयान में कहा है कि यह घटना 11 महीने पहले हुई थी। उनकी पत्नी घास काटने गई थी और बेटे को एक घंटे बाद घास लेने के लिए आने के लिए कह रही थी। जब वह जा रही थी, तो आरोपी रविकांत ने उसे जबरन ले लिया, उसकी जाँघिया खींच ली और उसके शरीर पर चढ़ गया और घटना का एक वीडियो क्लिप भी बनाया। उसने उसके कपड़े भी फाड़ दिए। उसके शरीर पर खून के धब्बे थे। उसके शरीर पर खून के धब्बे थे। जब वह मदद के लिए चिल्लाई तो उसकी मां पहुंची और उसे घर ले गई। जब वह

शिकायत करने के लिए आरोपी के घर गई तो आरोपी चंदेश्वर, नरेश, इंद्रजीत ने उसका पीछा किया। फिर वे पीड़ित के साथ पुलिस स्टेशन गए जहाँ दारोगाजी ने अपना बयान लिया और मामला दर्ज किया। वह आरोपी की पहचान करने का दावा करता है।

11.1 अपनी जिरह में उन्होंने कहा है कि वह साक्षर नहीं हैं। उसके पास अपनी कोई जमीन नहीं है। वह पीड़ित से 8.00 पी.एम. बजे मिला: पी. एम. और उसने अपनी पत्नी द्वारा उसे सूचित किया है। उन्होंने स्वयं इस घटना को नहीं देखा था।

12. पीडब्लू 2, पीड़िता की माँ, दुर्गावती देवी ने कहा है कि जब उसकी बेटी घास लेने के लिए खेत में आई, तो आरोपी रवि और मणिकांत ने उसे जबरन ले गया, उसकी पैंट उतार दी और बलात्कार किया। जब वह वहाँ गई तो उसने उनकी बेटी की पैंट को खून से लथपथ देखा। रवि अपनी बेटी के साथ बलात्कार कर रहा था और मणिकांत वीडियोग्राफ बना रहा था। इसके बाद वह अपनी बेटी को घर ले गई। इसके अलावा, वह शिकायत करने के लिए आरोपी के घर गई जब आरोपी उसके पीछे भागा। वह किसी तरह भागने में सफल रहा। पुलिस स्टेशन में, उसने आवेदन का मसौदा तैयार कराया। दारोगाजी ने उनका बयान ले लिया था।

12.1. अपनी जिरह में उसने कहा है कि उसकी बेटी का दाखिला एक सरकारी स्कूल में हुआ था। वह स्कूल का नाम नहीं जानती है। जब आरोपी उसकी बेटी को ले जा रहे थे, तो उसने उसे मुक्त करने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। अपनी बेटी को मुक्त कराने के प्रयास में आरोपी के कपड़े नहीं फटे। वह प्रयास में गिर गई थी और उसकी कमर में चोट लगी थी। उसकी बेटी के हाथों पर खरोंच आई थी और कपड़े खून से सने थे। उनकी बेटी को भी पूरे शरीर पर चोटें आई थीं। वह 10-15 मिनटों के लिए घटना स्थल पर थी। उसने यह भी कहा है कि वह और उसकी बेटी सीधे पुलिस स्टेशन गए थे और करीब 5.00 पी.एम. बजे बेटा पहुँचे थे और 10.00 पी.उम. बजे 11.00 पी एम. बजे तक वहाँ रहे: उन्होंने आरोपी रविकांत की मां द्वारा दायर 2020 के शिकायत मामले No.988 के प्रतिशोध में आरोपी के परिवार के साथ पिछली दुश्मनी के कारण आरोपी को गलत तरीके से फँसाने के सुझाव से इनकार किया है।

13. पीडब्लू 3, डॉ. किरण ओझा, वह डॉक्टर हैं जिन्होंने 29.05.2020 को पीड़ित लड़की की जांच की थी। उन्होंने इस प्रकार कहा है:

"शारीरिक परीक्षण पर-पीड़ित के पूरे शरीर पर कोई चोट नहीं है। प्यूबिक बाल, सहायक बाल और स्तन अच्छी तरह से विकसित हुए। योनि आसानी से दो उंगलियों को प्रवेश कराती है। हाइमेन ओल्ड टूट गया। इंट्रोइटस के पीछे की ओर थोड़ा विचलन।

डॉ. दीपक कुमार द्वारा की गई हिस्टोपैथोलॉजिकल जांच में कहा गया है कि शुक्राणु न तो जीवित पाए गए और न ही मृत। आर. बी. सी.-नील। एपिथेलियल कोशिका + वी मौजूद है।

आयु 16 (सोलह) से 17 (सत्रह) वर्ष के बीच।

राय: उपरोक्त तथ्यों के आधार पर, हम कह सकते हैं कि पीड़ित के साथ संभोग के मजबूत सबूत हैं। "

13.1. अपनी प्रतिपरीक्षा में, उसने कहा है कि उसने चोट की रिपोर्ट में पेरिनियल टियर के आकार और रंग का उल्लेख नहीं किया था। उन्होंने पेरिनियल टियर की उम्र का भी उल्लेख नहीं किया था। उसने यह भी कहा है कि पीड़िता ने उसके सामने में किसी भी वस्त्र/कपड़ा को पेश नहीं किया था। उसने यौन संभोग के बारे में राय बनाने के उद्देश्य से पीड़ित के डी. एन. ए. परीक्षण की सिफारिश नहीं की थी। उन्होंने कहा है कि योनि में दो उंगलियों का प्रवेश इस तथ्य को दर्शाता है कि पीड़ित नियमित अंतराल पर संभोग से पहले या यौन संभोग कर सकता है। उन्होंने गुप्तांग के बाल और सहायक बालों का नमूना किसी भी वैज्ञानिक परीक्षण के लिए नहीं भेजा था। उन्होंने चोट की रिपोर्ट के साथ हिस्टोपैथोलॉजिकल रिपोर्ट संलग्न नहीं की थी जो सदर अस्पताल, छापरा की संचिका में रखी गई है।

14. पीडब्लू 4, पीड़ित ने अपने बयान में कहा है कि जब वह मैदान में जा रही थी, रास्ते में रविकांत और मणि ने उसे पकड़ लिया और उसे एक गड्ढे में ले गए। रविकांत ने उसका कपड़ा फाड़ दिया। मणि उसके शरीर का वीडियोग्राफ बना रहा था। जब उसकी मां शिकायत करने के लिए आरोपी के घर गई तो उन्होंने उसकी पिटाई कर दी। उन्होंने उसकी माँ का भी उसके घर तक पीछा किया और चंदेश्वर और आठ अन्य लोगों ने उसके भाइयों रुपेश, उसके पिता संतोष महतो, पवन

महतो और दीपक को पीटा। वे थाने गए और पूरी घटना सुनाई। इसके बाद, सदर अस्पताल, छापरा में उनकी चिकित्सकीय जांच की गई। धारा-164 सी आर पी सी के तहत उसका बयान संबंधित दंडाधिकारी के समक्ष दर्ज किया गया था। उन्होंने एक पेन ड्राइव के माध्यम से वीडियोग्राफ तैयार किया जिसे प्रदर्श एम.ओ. 1 (विरोध पर) के रूप में प्रदर्शित किया गया था।

14.1 अपनी जिरह में, उसने कहा है कि रिकॉर्डिंग वाली पेन ड्राइव उसकी थी और रिकॉर्डिंग उसके भाई दीपक ने घर पर ही की थी। पेन ड्राइव पर रिकॉर्डिंग दो साल पहले की गई थी। पेन ड्राइव पुलिस को नहीं सौंपी गई थी। पुलिस ने मोबाइल फोन जब्त नहीं किया था। मोबाइल दीपक का था। उसने कहा है कि उसकी माँ एक घंटे के बाद घटना स्थल पर आई थी। उसने अपना कपड़ा पुलिस को नहीं सौंपा था। उसने यह भी कहा है कि जब वह लगभग 6 बजे घर लौटा तो उसने अपनी माँ को यह घटना सुनाई: वह 3 बजे पुलिस स्टेशन के लिए अपने पिता, माँ और भाई रुपेश के साथ रवाना हुई। घटना की अगली तारीख को वह अपनी मेडिकल जांच के लिए गई थी। उन्होंने इस सुझाव का खंडन किया है कि मुन्ना कुमार, रुपेश कुमार, पवन कुमार, मंदीप महतो और दीपक कुमार ने नरेश महतो, चंदेश्वर महतो और इंद्रजीत कुमार पर हमला किया था, जिसके लिए आरोपी रविकांत की मां रामकलो देवी ने विद्वान मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी 2020 का छापरा की अदालत में शिकायत मामला संख्या संख्या 988 दर्ज की थी, जिससे 2020 का कोपा थाना मामला संख्या 145 स्थापित किया गया और बदले में, वह अपने माता-पिता के निर्देश पर झूठी गवाही दे रही है। उसने इस सुझाव से भी इनकार किया है कि उसने उक्त मामले से छुटकारा पाने या आरोपी से पैसे छीनने के लिए झूठी गवाही दी है।

15. पीडब्लू 5 सुनील कुमार ठाकुर ने कहा है कि 27.05.2020 को उन्हें कोपा थाना में ए. एस. आई. के रूप में तैनात किया गया था। उन्हें कोपा थाना केस संख्या 117 की जांच का प्रभार दिया गया था। उन्होंने पीड़ित का बयान दर्ज किया, पुलिस दल के साथ घटना स्थल का दौरा किया और पीड़ित का बयान फिर से दर्ज किया। उन्होंने दुर्वावती देवी और संतोष महतो के बयान भी दर्ज किए। उन्होंने घटना स्थल का विवरण दिया है और उन्हें कुछ भी उल्लेखनीय नहीं मिला है। उन्होंने उसी दिन आरोपी इंद्रजीत कुमार, राहुल कुमार, नरेश महतो और चंदेश्वर महतो को

गिरफ्तार कर लिया। अगले दिन उसने धारा-164 सी.आर.पी.सी. के तहत पीड़ित का बयान दर्ज कराया और पीड़ित की चिकित्सकीय जांच भी कराई।

15.1 अपनी जिरह में उन्होंने कहा है कि प्रथम सूचना प्रतिवेदन की प्रति के अलावा, एस. एच. ओ. द्वारा उन्हें कुछ भी नहीं सौंपा गया था। औपचारिक प्रथम सूचना प्रतिवेदन ए. एस. आई. बेचन सिंह द्वारा तैयार किया गया था। कंडिका-1 उनकी लिखावट में है, लेकिन तीसरी पंक्ति में तारीख में अधिलेखन है, जिसमें उनका प्रारंभिक अक्षर नहीं है। हालांकि एक जगह उसने कंडिका-3 में दर्ज किया है कि उसने पुलिस स्टेशन में पीड़िता का बयान लिया, दूसरी जगह उसने कहा है कि उसने पीड़िता का बयान उसके घर पर लिया था। वह घटना स्थल की सटीक दूरी बताने में असमर्थ हैं, लेकिन उनके आकलन के अनुसार, यह 200 गज है। उन्होंने स्वीकार किया है कि उन्हें पैरों के निशान, खून के धब्बे, फटे कपड़े या कुचली हुई घास नहीं मिली है। उन्होंने अपनी केस डायरी में जब्ती-सूची पर चर्चा नहीं की है। उसे न तो सौंप दिया गया और न ही घटना के समय पहने हुए कपड़े दिखाए गए। उन्हें घटना का वीडियोग्राफ भी नहीं दिखाया गया और न ही पीड़ित के घर पर कोई इलेक्ट्रॉनिक उपकरण उन्हें सौंपा गया। उसने अभियुक्त का डी. एन. ए. परीक्षण नहीं करवाया था।

15.2 अपनी आगे की प्रतिपरीक्षा में उन्होंने कहा है कि कंडिका-35 में दर्ज की गई तारीख गलत नहीं है, बल्कि यह एक पुनर्लेखन है, जिसमें उनका प्रारंभिक उल्लेख नहीं है। उसने पीड़ित के किसी पड़ोसी या घटना स्थल के पास रहने वाले स्थानीय लोगों का बयान दर्ज नहीं किया था। उन्होंने केस डायरी में 2020 के शिकायत केस नंबर 988 से उत्पन्न 2020 के कोपा थाना केस संख्या 145 वाले आरोपी की मां द्वारा दर्ज किए गए काउंटर मामले का विवरण नहीं दिया था। उन्होंने नहीं देखा था कि इंद्रजीत कुमार के बाएं हाथ पर पट्टी लगी हुई थी और चंदेश्वर प्रसाद उर्फ चंदेश्वर महतो के सिर पर चोट लगी थी। पीड़ित की माँ ने यह नहीं बताया था कि वह घटना स्थल पर भागा था जब उसने अपनी बेटी को मदद के लिए रोते हुए सुना जब उसने आरोपी को भागते देखा। उन्होंने यह नहीं कहा था कि उनकी बेटी का पैंट खून से लथपथ दुर्गावती देवी ने उनके सामने यह नहीं कहा था कि उन्होंने आरोपी रविकांत को बलात्कार करते देखा था। उसने

कहा था कि वह आरोपी के घर शिकायत करने गई थी जब आरोपी ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया और उसका पीछा किया और फिर से उसके घर आया और रुपेश कुमार, पवन कुमार, मुन्ना कुमार और उसकी बड़ी साली (गोतनी) पर हमला किया। उन्होंने इस बात से इनकार किया है कि की गई जांच त्रुटिपूर्ण है और उन्होंने पुलिस स्टेशन में ही केस डायरी तैयार की थी। यह तथ्य नहीं है कि ऐसी कोई घटना नहीं हुई थी और रामकला देवी द्वारा दर्ज कराए गए मामले में पीड़ित और उसके परिवार के सदस्यों को बचाने के लिए उन्होंने 2020 के कोपा थाना केस संख्या 145 में घायल व्यक्तियों के बारे में गलत सबूत दिए थे।

16. हमने पक्षकारों के विद्वान वकीलों द्वारा बहस की गई दलीलों पर विचार किया है।

17. हमने अभिलेख पर रखी गई सामग्री और अभियोजन पक्ष के नेतृत्व में साक्ष्य का भी अध्ययन किया है।

18. पक्षकारों के विद्वान अधिवक्तों को सुनने और अभिलेख पर रखी गई सामग्री को देखने के बाद, यह पता चलेगा कि लिखित शिकायत पीड़ित द्वारा 27.05.2020 को दी गई थी। यह अभिलेख में आया है कि उक्त लिखित शिकायत वास्तव में पीड़ित के भाई यानी दीपक कुमार द्वारा लिखी गई थी। हालांकि, उक्त दीपक कुमार, यानी अभियोजन पक्ष द्वारा पीड़ित के भाई से पूछताछ नहीं की जाती है। लिखित शिकायत में, पीड़ित ने कहा है कि 27.05.2020 को पीड़िता की माँ घास काटने के लिए खेत में गई थी और उसे एक घंटे के बाद आने और घास लेने के लिए कहा था। निर्देश के अनुसार, लगभग 5:00 बजे शाम को, वह घास इकट्ठा करने के लिए खेत में जा रही थी, जब आरोपी रविकांत महतो (अपीलकर्ता संख्या 1) और गाँव-बसदीला, थाना कोपा के मणि कुमार उर्फ काकू (अपीलकर्ता संख्या 2) ने उसे तिरछे इरादे से घेर लिया और आरोपी रविकांत महतो ने उसे पकड़ लिया, उसे पास के गड्ढे में ले गया, उसका निचला कपड़ा (सलवार) उतार दिया, उसके समीज को फाड़ दिया, उसे गड्ढे में धकेल दिया और उसके शरीर के साथ अश्लील हरकतें करने लगा और मणि कुमार उर्फ काकू पर आरोप लगाया कि उसने अपने मोबाइल फोन में घटना को कैद करना शुरू कर दिया, जिस पर वह शोर मचाने लगी, जिस पर उसकी माँ दौड़ती हुई आई और उसे बचा लिया।

18.1 पीड़ित द्वारा दिए गए बयान में, उसने कहा है कि जब वह मैदान पर जा रही थी, रास्ते में रविकांत और मणि ने उसे पकड़ लिया और उसे एक गड्ढे में ले गए। रविकांत ने उसका कपड़ा फाड़ दिया। मणि उसके शरीर का वीडियोग्राफ बना रहा था। जब उसकी माँ शिकायत करने के लिए आरोपी के घर गई तो उन्होंने उसकी पिटाई कर दी।

18.2 इस स्तर पर, यदि पी. डब्ल्यू. 2 पीड़िता की माँ द्वारा दिया गया बयान देखी जाती है, उसने अपने जाँच-प्रधान में कहा है कि, वास्तव में, उसने प्रश्नगत घटना को देखा है और उसने अपीलार्थी संख्या 1 द्वारा किए गए बलात्कार के बारे में बताया है। उसने यह भी बताया है कि पीड़ित के कपड़े पूरी तरह से खून से सना हुआ था। इस प्रकार, पीडब्लू 2 के उपरोक्त बयान से, अभियोजन पक्ष द्वारा यह अनुमान लगाया जाता है कि माँ एक चश्मदीद गवाह है। हालाँकि, यदि पीड़ित की माँ, पीडब्लू 2 की जिरह को ध्यान से देखा जाए, तो यह पता चलता है कि वह घटना स्थल से लौटने के बाद एक घंटे तक घर पर रही थी, जिसके दौरान कोई उनसे मिलने नहीं आया था। उसने अपनी जिरह में आगे स्वीकार किया है कि उसकी बेटी रोते हुए आ रही थी और उसके बाद उसने घटना के बारे में बताया है। पीडब्लू 2 ने आगे कहा है कि घटना स्थल से वह लगभग 5.00 पी.एम. बजे अपनी बेटी के साथ पुलिस स्टेशन गई थी: उस समय उसकी बेटी ने वही कपड़े पहने थे जो उसने घटना के समय पहने थे। कपड़ों पर खून के धब्बे थे। हालाँकि, उक्त कपड़े पुलिस को नहीं सौंपे गए थे। इस स्तर पर, यह भी ध्यान देने योग्य है कि पीडब्लू 4, पीड़ित ने प्रतिपरीक्षा के दौरान कहा है कि जब वह घटना स्थल से लौट रही थी, तो उसकी माँ रास्ते में मिली और उसने उसे पूरी घटना के बारे में बताई। इसके बाद वे लगभग 6.00 पी.एम. बजे: घर में वे एक घंटे तक रहे। इसके बाद, लगभग 8.00 पी.एम. बजे: को उसके पिता घर आए। उसकी माँ भी घर में मौजूद थी और उसके बाद वे पुलिस स्टेशन गए।

18.3 उपरोक्त से यह कहा जा सकता है कि अभियोजन-गवाहों द्वारा दिए गए बयानों में बड़े विरोधाभास हैं।

19. इस स्तर पर पीडब्लू 3 द्वारा दिए गए बयान पर भी विचार किया जाना आवश्यक है। पीडब्लू 3 द्वारा दिए गए बयान से, यह पता चलता है कि प्रतिपरीक्षा में, उक्त डॉक्टर ने विशेष रूप से कंडिका-11 में कहा है कि योनि में दो उंगलियों का प्रवेश इस बात का संकेत देता है कि पीड़िता को नियमित अंतराल पर यौन संभोग करने से पहले यौन संभोग कर सकता है।

20. बयान के कंडिका-5 में डॉक्टर ने आगे कहा है कि डॉ. दीपक कुमार द्वारा की गई हिस्टोपैथोलॉजिकल जांच की रिपोर्ट में कहा गया है कि शुक्राणु न तो जीवित पाए गए और न ही मृत। पीड़ित की उम्र भी 16 से 17 साल के बीच बताई गई थी। कंडिका-3 में डॉक्टर ने आगे कहा है कि पीड़ित के पूरे शरीर पर कोई चोट नहीं है और हाइमेन पुराना फट गया था।

20.1 इस प्रकार, उपरोक्त चिकित्सा साक्ष्य से यह कहा जा सकता है कि पीड़ित के पूरे शरीर पर कोई चोट नहीं है और इसलिए, जिस तरह से घटना हुई, उसके बारे में पीड़ित द्वारा सुनाई गई कहानी डॉक्टर के उपरोक्त साक्ष्य द्वारा समर्थित नहीं है।

20.2 इस स्तर पर, यह ध्यान रखना भी प्रासंगिक है कि अभियोजन पक्ष कोई भी दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत करके पीड़ित की उम्र को साबित करने में भी विफल रहा है, जो एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह अभिलेख में आया है कि पीड़िता को स्कूल में भर्ती कराया गया था और उसने कक्षा-5 तक पढ़ाई की थी। हालांकि, जांच अधिकारी कोई भी स्कूल रजिस्टर या पीड़ित का जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत प्रस्तुत में विफल रहे हैं। चिकित्सा साक्ष्य से भी यह पता चलता है कि पीड़ित की आयु 16 से 17 वर्ष निर्धारित की गई थी।

20.3 इस स्तर पर, हम **जया माला** (उपरोक्त) के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को संदर्भित करना चाहेंगे, जिसमें कंडिका-9 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने निम्नानुसार अभिनिर्धारित किया है:

“9. डिटेंयु को 18 अक्टूबर, 1981 को गिरफ्तार किया गया और हिरासत में लिया गया। विशेषज्ञ की रिपोर्ट 3 मई, 2982/1982 की है, जो हिरासत की तारीख के लगभग सात महीने बाद की है। दिन-प्रतिदिन आयु में वृद्धि एक अनैच्छिक प्रक्रिया है और शरीर की संरचना में शारीरिक परिवर्तन लगातार होते रहते हैं। सामान्य गणना पर भी, यदि

विशेषज्ञ द्वारा बताई गई अनुमानित आयु से सात महीने की कटौती की जाती है, तो अक्टूबर 1981 में बंदी की आयु लगभग 17 वर्ष थी, जिसके परिणामस्वरूप याचिका में दिया गया बयान पूरी तरह से हालाँकि, यह कुख्यात है और कोई भी न्यायिक ध्यान दे सकता है कि रेडियोलॉजिकल परीक्षा द्वारा निर्धारित उम्र में त्रुटियाँ का अंतर दोनों तरफ दो साल है। निस्संदेह, इसलिए, बंदी एक युवा स्कूल जाने वाला लड़का था। यह समान रूप से प्रतीत होता है कि शैक्षणिक संस्थानों में कुछ उथल-पुथल हुई थी। यह युवा स्कूल जाने वाला लड़का छात्रों के अधिकारों के बारे में उत्साहित हो सकता है और दो अलग-अलग तिथियों पर उसने कानून की सीमा को मामूली रूप से पार कर लिया। यह विश्वास करना समझ से परे है कि क्या वह निवारक निरोध के कठोर उपाय के साथ जा सकता है। कोई भी युवा लोगों के साथ व्यवहार नहीं कर सकता है, अपरिपक्व हो सकता है, थोड़ा गलत हो सकता है, थोड़ा अधिक उत्साही हो सकता है, एक स्लेज हथौड़े के साथ। हमारी राय में, इस मामले के तथ्यों और परिस्थितियों में निरोध आदेश पूरी तरह से अनुचित था और रद्द किए जाने के योग्य था।

20.4 इस प्रकार, उपरोक्त निर्णय से यह कहा जा सकता है कि निर्धारित आयु में अंतर दोनों तरफ दो वर्ष है।

21. इसलिए, इसका लाभ अभियुक्त को दिया जा सकता है और यह कहा जा सकता है कि पीड़ित नाबालिग नहीं थी। इस स्तर पर यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पुलिस को दी गई लिखित शिकायत में यह पीड़ित का मामला है कि आरोपी रवि कुमार, अपीलार्थी संख्या 1, उसके शरीर के साथ अश्लील कृत्य कर रहा था और उसने यह आरोप नहीं लगाया है कि उसने उसके साथ बलात्कार किया है। उसने आरोपी द्वारा किए गए विशिष्ट अश्लील कृत्य का आरोप नहीं लगाया है। पीड़ित ने लिखित शिकायत में कहा है कि अपीलार्थी संख्या 2 अपने मोबाइल फोन पर वीडियोग्राफ बना रहा था। इस प्रकार पीड़ित द्वारा अपनी लिखित शिकायत में इनमें से किसी भी अपीलार्थी के खिलाफ बलात्कार का आरोप नहीं लगाया गया है। इसके अलावा, यह आरोप लगाया जाता है कि वीडियो क्लिप के माध्यम से उक्त घटना को फेसबुक पर वायरल कर दिया गया था।

हालाँकि, यह आश्चर्य की बात है कि अपीलार्थी संख्या 2 का मोबाइल फोन जाँच अधिकारी द्वारा जब्त नहीं किया गया था। यह अभिलेख में आया है कि दीपक कुमार (पीड़ित के भाई) का मोबाइल फोन या दीपक कुमार के मोबाइल फोन से तैयार की गई पेन ड्राइव को जांच एजेंसी के सामने पेश नहीं किया गया था और पहली बार पेन ड्राइव को अदालत के समक्ष पेश किया गया था। यह ध्यान देने योग्य है कि अभियोजन पक्ष दीपक कुमार से पूछताछ प्रस्तुत में विफल रहा है और जांच अधिकारी के सामने दीपक कुमार का मोबाइल फोन भी पेश करने में विफल रहा है। उक्त पेन ड्राइव, हालाँकि प्रदर्शित है, आपति बचाव पक्ष द्वारा ली गई थी और यह विशेष रूप से आरोप लगाया जाता है कि पेन ड्राइव को गढ़ा गया है।

22. जाँच अधिकारी के साक्ष्य से यह पता चलता है कि पीड़ित के खून से सने कपड़े जाँच एजेंसी द्वारा जब्त नहीं किए गए थे और इसलिए, उन्हें एफ. एस. एल. को नहीं भेजा गया है। जाँच अधिकारी को घटना स्थल पर कोई खून नहीं मिला।

23. यह अभिलेख से आगे पता चलेगा कि शुरू में अपीलार्थी संख्या 2 के खिलाफ आरोप केवल आई. टी. अधिनियम की धारा-66 और आई. पी. सी. की धारा 341 के तहत तय किया गया था और उसके बाद ही अभियोजन पक्ष ने धारा-313 सी आर पी सी के तहत गवाहों और अभियुक्तों के बयानों की जांच की 19.09.2022 को पर दर्ज किया गया था और उसके बाद ही केवल 22.03.2023 को पॉक्सो अधिनियम की धारा-6, पॉक्सो अधिनियम की धारा-6, आई. पी. सी. की धारा-4/11 और आई. टी. अधिनियम की धारा-67 और 67ए के तहत अतिरिक्त आरोप तय किया गया था और दो दिनों की अवधि के बाद ही यानी 24.03.2023 को पर फैसला सुरक्षित रखा गया था। अपीलार्थी सं. 2 का यह विशिष्ट मामला है कि उपरोक्त के कारण, अपीलार्थी सं. 2 के प्रति गंभीर पूर्वाग्रह पैदा किया गया है क्योंकि अपीलार्थी सं. 2 को उसके खिलाफ बनाए गए अतिरिक्त आरोप के संबंध में बचाव करने का पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं किया गया था। यह भी पता चलता है कि निचली अदालत ने अपीलार्थी संख्या 2 को उसके खिलाफ बनाए गए अतिरिक्त आरोपों के लिए दोषी ठहराया है।

24. वर्तमान मामले के उपरोक्त तथ्यों और परिस्थितियों को देखते हुए, हमारा विचार है कि अभियोजन पक्ष अपीलार्थियों के खिलाफ मामले को उचित संदेह से परे साबित करने में बुरी तरह विफल रहा है, जिसके बावजूद निचली अदालत ने आक्षेपित निर्णय और आदेश पारित किया है। इसलिए, इसे रद्द किया जाना चाहिए और दरकिनार किया जाना चाहिए।

24.1 चूंकि ऊपर नामित दोनों अपीलार्थी जेल में हैं, इसलिए उन्हें निर्देश दिया जाता है कि यदि उनकी उपस्थिति किसी अन्य मामले में आवश्यक नहीं है तो उन्हें तुरंत हिरासत से रिहा कर दिया जाए।

25. अपील की अनुमति है।

(विपुल एम. पंचोली, न्यायमूर्ति)

(सुनील दत्ता मिश्रा, न्यायमूर्ति)

के.सी झा/-

खण्डन (डिस्क्लेमर)- स्थानीय भाषा में निर्णय के अनुवाद का आशय, पक्षकारों को इसे अपनी भाषा में समझने के उपयोग तक ही सीमित है और अन्य प्रयोजनार्थ इसका उपयोग नहीं किया जा सकता। समस्त व्यवहारिक, कार्यालयी, न्यायिक एवं सरकारी प्रयोजनार्थ, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रमाणिक होगा साथ ही निष्पादन तथा कार्यान्वयन के प्रयोजनार्थ अनुमान्य होगा।